Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

मनीशा चाहर
शोधार्थी
डॉ. कमलेष सिंह
मार्गदर्षक
प्राध्यापक (षिक्षाषास्त्र) जैन कॉलेज, ग्वालियर

सारांष

विद्यालय षिक्षा के केन्द्र बिन्दु हैं। विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण विद्यालय की षिक्षा, षिक्षक एवं विद्यार्थियों को प्रभावित करता है। वातावरण का विषेशकर विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थी के जीवन पर गहरा और अमिट प्रभाव पड़ता है जो उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है। जैसा विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण होता है विद्यार्थियों को वैसी ही षिक्षा मिलती है, वैसी ही षैक्षिक उपलब्धियाँ हासिल होती हैं, षोधार्थी ने यह जानने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत षोध में ''वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव'' का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत षोध–पत्र में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें न्यादर्ष का चयन षोधार्थी ने उद्देष्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा किया है। न्यादर्ष के रूप में 50 विद्यार्थी षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एवं 50 विद्यार्थी अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के चयनित किए गए, इस प्रकार कुल 100 विद्यार्थियों का चयन उद्देष्यपूर्ण निदर्षन विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु कक्षा–10वीं में प्राप्त अंकों के प्रतिषत को षैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। प्रदत्तों के विष्लेशण हेतु माध्य, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रषासन किया गया। षोध विष्लेशण में पाया गया कि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की षैक्षिक उपलब्धि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से अधिक अच्छी है।

मुख्य षब्द : वित्तीय आधार, षासकीय, अषासकीय, विद्यालय, विद्यार्थी, षैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण बालक/बालिकाओं के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। षिक्षकों एवं अन्य सहयोगियों द्वारा किया गया व्यवहार सम्पूर्ण विद्यालय व्यवस्था को प्रभावित करता है। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे कठिन और नाजुक समय है। इस समय में

षारीरिक एवं मानसिक दृश्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं, इसी अवस्था में वह अच्छा–बुरा, धार्मिक–अधार्मिक, देष–प्रेमी या देष–द्रोही, परिश्रमी या अकर्मण्य, सभ्य–असभ्य, षिश्ट–अषिश्ट आदि बन सकता है। अतः विद्यालयों को विद्यार्थी की आवष्यकता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय वातावरण का निर्माण करना चाहिए। विद्यालय संगठनात्मक वातावरण ऐसा होना चाहिए जो ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे कि विद्यार्थी परिपक्व हो, उसका अपने वातावरण के साथ उचित सामंजस्य हो और उच्च स्तर की षैक्षिक उपलब्धि हो।

विद्यालय संगठनात्मक वातावरण जितना उच्च कोटि का होगा उतने उच्च कोटि के गुण बालक में उत्पन्न होंगे, यथा–अनुषासन, दया, प्रेम, मर्यादा, संयम, स्वच्छता, सहयोग, नियमितता, आदर की भावना, समाज सेवा की भावना, साथियों से मित्रता की भावना, परिश्रमषीलता आदि गुणों का विकास संभव है। अतः विद्यालय संगठनात्मक वातावरण में ऐसे सभी उपायों को सम्मिलित किया जाता है जिसमें विद्यार्थियों को चहुँमुखी विकास हो सके। संगठनात्मक वातावरण हेतु विद्यालयों में ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम या आयोजन किया जाना चाहिए जिनको देखकर विद्यार्थियों के हृदय में दया, प्रेम, अनुषासन, सहयोग, भाईचारे की भावना, राश्ट्रीय भावना, मानव मात्र के प्रति कल्याण की भावना आदि के भाव विकसित हो सकें।

बच्चों को विद्यालय में अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है तो वे सही दिषा में प्रगति कर सकते हैं। विद्यालय का वातावरण बालक के व्यक्तित्व के विकास को इस सीमा तक प्रभावित करता है कि योग्य और होनहार बालक विद्यालय के अनुपयुक्त वातावरण के कारण समुचित विकास से वंचित हो जाते हैं। इसके विपरीत निम्न स्तर की योग्यता रखने वाले बच्चों को विद्यालय के अच्छे वातावरण द्वारा उत्कृश्ट बनाया जा सकता है। निश्कर्श यह है कि बालक की योग्यता और क्षमता कैसी भी हो, विद्यालय का वातावरण जैसा होगा बालक के व्यक्तित्व का विकास भी उसी के अनुरूप होगा। विद्यालय का अच्छा वातावरण बालक के लिए सीखने की अनुकूल स्थितियाँ उपलब्ध करता है। विद्यालय का वातावरण ऐसा कारक है जो विद्यार्थियों को प्रभावित करता है और उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन लाता है। बच्चों के भविश्य की नींव घर या परिवार में रखी जाती है। विद्यालय में षिक्षक द्वारा उसे अनुकूल बनाकर उस पर विकास का भवन निर्मित किया जाता है।

शिक्षा का उद्देष्य है कि विद्यालय में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों का नैतिक स्तर ऊँचा हो, सभी विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से स्थिर बनें, वे षारीरिक रूप से स्वस्थ और सामाजिक रूप से व्यावहारिक हों ताकि वे परिवार, विद्यालय और समाज में अपने को समायोजित कर सकें। विद्यार्थियों में उक्त

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

योग्यताओं और क्षमताओं के विकास के लिए यह आवष्यक है कि विद्यालय का वातावरण अनुकूल स्थितियों से युक्त हो। विद्यालय में वातावरण को संवारने में षिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। कुछ परिवारों तथा आस–पास के अवांछित प्रकरणों के फलस्वरूप बच्चों का सही दिषा में विकास हो जाता है और कुछ बच्चे अनेक प्रकार की कुंठाओं से ग्रस्त हो जाते हैं। विद्यालय का अच्छा वातावरण उन्हें सही दिषा में विकास की ओर उन्मुक्त करता है। षिक्षक अपनी प्रभावी षिक्षण, उत्तम और स्नेहपूर्ण आत्मीय व्यवहार द्वारा छात्र–छात्राओं के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ता है और वे हृदय से षिक्षक को अपने हितैशी एवं मार्गदर्षक के रूप में स्वीकार करते हैं। विद्यालय में षिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार, स्वयं का व्यक्तित्व एवं चरित्र ऐसी कई बातें है जो बालक के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती हैं। बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य उनके षारीरिक स्वास्थ्य से प्रभावित होता है। विद्यालय में स्वास्थ्य एवं षारीरिक षिक्षा का होना भी जरूरी है। विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण इस ढंग से सुव्यवस्थित होना चाहिए कि छात्र–छात्राओं में स्वानुषासन की प्रवृत्ति सहजरूप से विकसित हो। षिक्षकों का सुनियोजित नियंत्रण छात्र–छात्राओं में आत्मसंयम, सहयोग और सामुदायिक प्रयास के गुण विकसित करने में सहायक हो। विद्यालय को उत्तम स्वरूप देने के लिये विद्यालय में भौतिक, षैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण का निर्माण करना आवष्यक है जिससे बच्चे विद्यालय की ओर आकृश्ट हों और सीखने में उनको प्रेरणा मिले।

षैक्षिक उपलब्धि

षैक्षिक उपलब्धि में दो षब्द प्रयुक्त हुए हैं। षैक्षिक षब्द का आषय ज्ञान एवं कौषल से है तथा उपलब्धि से आषय ऊँचाईयों को छूना है। इस प्रकार ज्ञान एवं कौषल के क्षेत्र में ऊँचाईयों को छूना षैक्षिक उपलब्धि कहलाता है। व्यक्ति की उपलब्धि के क्षेत्र अलग–अलग होते हैं–जैसे षैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, खेलकूद आदि। षिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान या कौषल में जो उपलब्धि प्राप्त होती है वह षैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। विद्यालयों में अलग–अलग कक्षाओं के विद्यार्थी वर्श भर में अलग–अलग विशयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों की ज्ञान–अर्जन करने की क्षमता एक समान नहीं होती है। किसी कक्षा विषेश में विद्यार्थियों ने कितनी मात्रा में प्रगति की, इसकी जाँच करना अति आवष्यक होती है। विद्यार्थियों की उपलब्धि हेतु अनेक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है, इन परीक्षणों द्वारा विभिन्न पाठ्य पुस्तकों में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान, कार्यकुषलता एवं योग्यता का मापन होता है। परीक्षण में उसी विशय सामग्री को रखा जाता है जिसका अध्ययन विद्यार्थी विद्यालय में उपस्थित होकर करते हैं। इन परीक्षा परिणामों के आधार पर ही उन्हें कक्षा में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

किया जाता है तथा उत्तीर्ण की कई श्रेणी जैसे– प्रथम, द्वितीय (मध्यम), तृतीय (निम्न) आदि होतीं हैं, इसे ही षैक्षिक उपलब्धि कहते हैं।

अध्ययन की आवष्यकता

षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को सरकार की तरफ से षिक्षकों के वेतन के साथ–साथ अन्य संसाधन हेतु सम्पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है जबकि अषासकीय विद्यालयों को सरकार नियमानुसार संचालन हेतु अनुमति प्रदान करती है, उनके समस्त व्यय निजी संगठन या समिति द्वारा किए जाते हैं। षोधार्थिनी की यह जिज्ञासा हुई कि उक्त दोनों विद्यालयों में कौन से विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि पर अधिक अच्छा प्रभाव पड़ता है, अतः उक्त विद्यालयों की षैक्षिक उपलब्धि की जानकारी हेतु यह अध्ययन करने का निष्चिय किया गया।

समस्या कथन

''वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव''

वित्तीय आधार पर वर्गीकृत का आषय षासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों से है।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

ऐसे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिनमें षिक्षकों को मध्यप्रदेष सरकार सम्पूर्ण वेतन देती है एवं अन्य सम्पूर्ण संसाधनों का व्यय सरकार उठाती है।

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

ऐसे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिनका सम्पूर्ण व्यय निजी संगठन करते हैं सरकार इन्हें केवल संचालन की अनुमति प्रदान करती है।

शैक्षिक उपलब्धि

कक्षा–10वीं के सम्पूर्ण विशयों के प्राप्तांको के प्रतिषत को षैक्षिक उपलब्धि का आधार माना गया है।

शोध के उद्देष्य

- **ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

- ग्वालियर **शहर** के **शासकीय**एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्वालियर **शहर** के **शासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
- ग्वालियर **शहर** के **अशासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्वालियर षहर के **शासकीय** एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्वालियर षहर के **शासकीय** एवं **अशासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

षोध की परिकल्पनाएँ

- भ्व$_{1}$: ग्वालियर षहर के **शासकीय** एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- भ्व$_{1}$: ग्वालियर षहर के **शासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- भ्व$_{1इ}$: ग्वालियर **शहर** के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- भ्व$_{1ब}$: ग्वालियर **शहर** के **शासकीय** एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- भ्व$_{1क}$: ग्वालियर **शहर** के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण।

आश्रित चर : विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि।

षोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत षोध में षोधार्थिनी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। कक्षा–10 के कुल प्राप्तांकों के प्रतिषत को षैक्षिक उपलब्धि का आधार मानकर अध्ययन किया गया है।

षोध न्यादर्ष

प्रस्तुत षोध में षोधार्थिनी ने ग्वालियर नगर के 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का चयन किया।

न्यादर्ष

विद्यालय का प्रकार	विद्यालयों की संख्या	छात्र	छात्राएँ	कुल विद्यार्थी
षासकीय उ.मा. विद्यालय	10	25	25	50
अषासकीय उ.मा. विद्यालय	10	25	25	50
योग	**20**	**50**	**50**	**100**

परिसीमन

- प्रस्तुत षोध ग्वालियर नगर तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत षोध में ग्वालियर नगर के 10 षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं 10 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत षोध में कक्षा–11वीं के 100 विद्यार्थियों को ही चुना गया है।

षोध न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विष्लेशण एवं परिकल्पनाओं की जाँच हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं ष्जष परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

भ्व$_1$: ग्वालियर षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक–1

ग्वालियर षहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं ष्जष का मान

समूह	विद्यार्थियों की सख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (व)	ज मान	निश्कर्श
षासकीय उ.मा. विद्यालय	50	62.05	18.14	4.05	सार्थक H_{01} अस्वीकृत
अषासकीय उ.मा. विद्यालय	50	76.85	12.21		

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्वातंत्रय ;कण्द्धि त्र ;छ$_1$.1द्ध. ;छ$_2$.1द्ध त्र ;50.1द्ध. ;50.1द्ध त्र 49. 49 त्र 98

0.05 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 1.98, 0.01 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.63

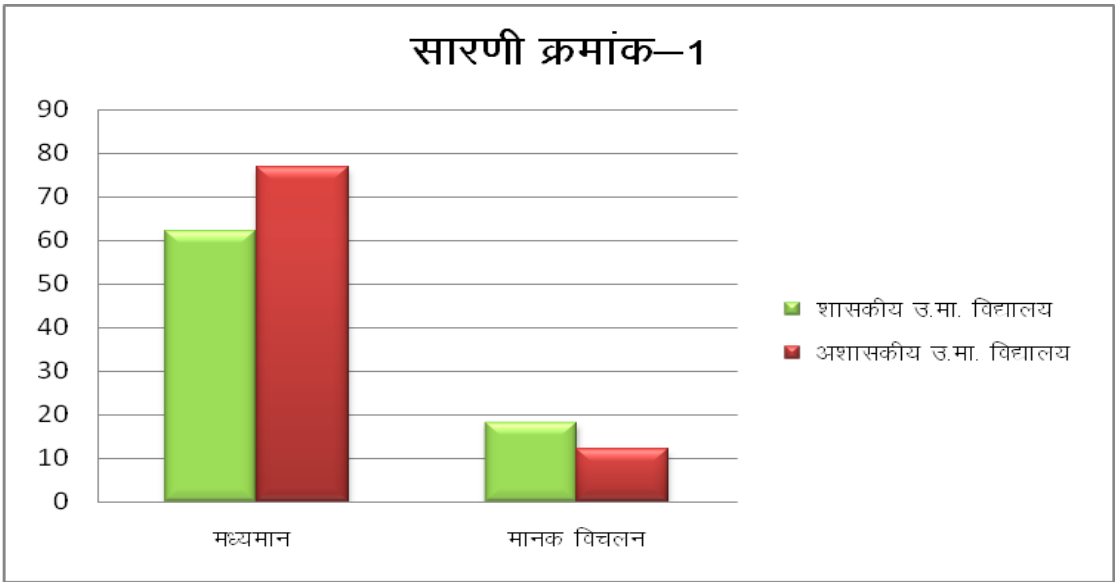

व्याख्या एवं विष्लेशण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पश्ट है कि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 62.05 एवं मानक विचलन 18.14 है तथा अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 76.85 एवं मानक विचलन 12.21 है। चूँकि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वातंत्रय (कण्फि) 98 पर सार्थकता के लिए ष्जष् का मान 0.05 विष्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विष्वास स्तर पर 2.63 है जबकि गणना से प्राप्त ष्जष्का मान 4.05 है जो कि दोनों स्तरों पर विष्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। चूँकि ष्जष् का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर षून्य परिकल्ना अस्वीकृत हाती है। अतः दोनों स्तरों पर षून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

भ्व$_i$: ग्वालियर षहर के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक–2

ग्वालियर षहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं ष्जष् का मान

समूह	विद्यार्थियों की सख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (व)	ज मान	निश्कर्श
छात्र	25	73.20	10.71	1.17	असार्थक भ्$_{01}$ स्वीकृत
छात्राएँ	25	76.00	12.21		

स्वातंत्रय ;कण्ण्द्धि त्र ;छ$_1$.1द्ध. ;छ$_2$.1द्ध त्र ;25.1द्ध. ;25.1द्ध त्र 24. 24 त्र 48

0.05 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.01, 0.01 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.68

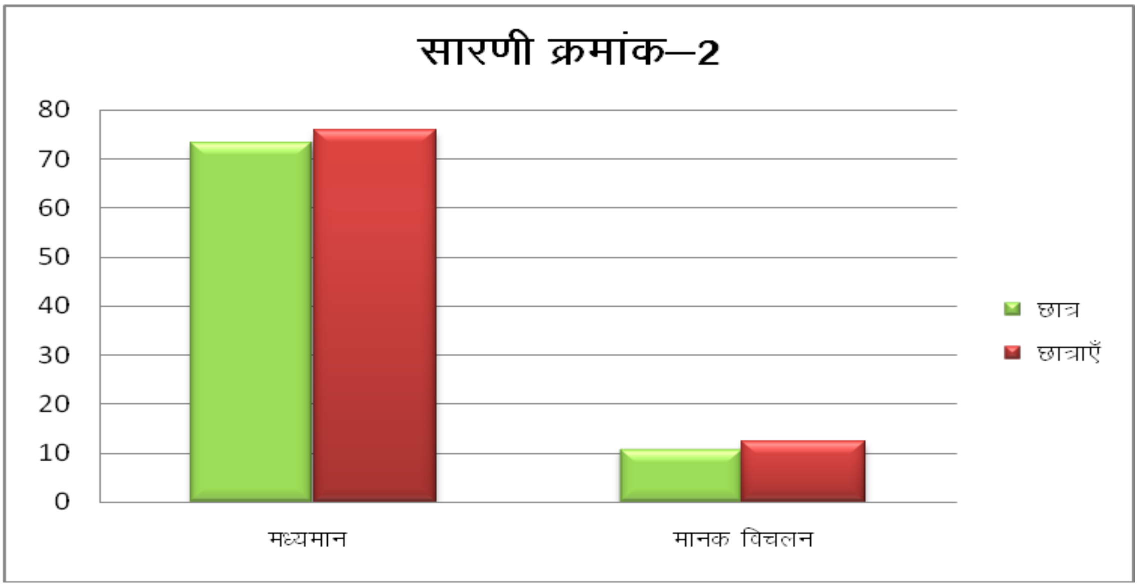

व्याख्या एवं विष्लेशण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पश्ट है कि **शासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 73.20 एवं मानक विचलन 10.17 है तथा षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 76.00 एवं मानक विचलन 12.21 है। चूँकि

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वातंत्रय 48 पर सार्थकता के लिए ष्जष् का मान 0.05 विष्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विष्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त ष्जष् का मान 1.17 है जो कि दोनों स्तरों पर विष्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर असार्थक है। चूँकि ष्जष् का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर षून्य परिकल्ना अस्वीकृत हाती है। अतः दोनों स्तरों पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर षहर के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

भ्व$_{1इ}$: ग्वालियर षहर के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक–3

ग्वालियर षहर के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं ष्जष् का मान

समूह	विद्यार्थियों की सख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (व)	ज मान	निश्कर्श
छात्र	25	74.64	11.51	0.61	असार्थक
छात्राएँ	25	76.53	12.23		भ्$_{01इ}$ स्वीकृत

स्वातंत्रय ;कण्ध्द्व त्र ;छ$_1$.1द्व. ;छ$_2$.1द्व त्र ;25.1द्व. ;25.1द्व त्र 24. 24 त्र 48

0.05 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.01, 0.01 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.68

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

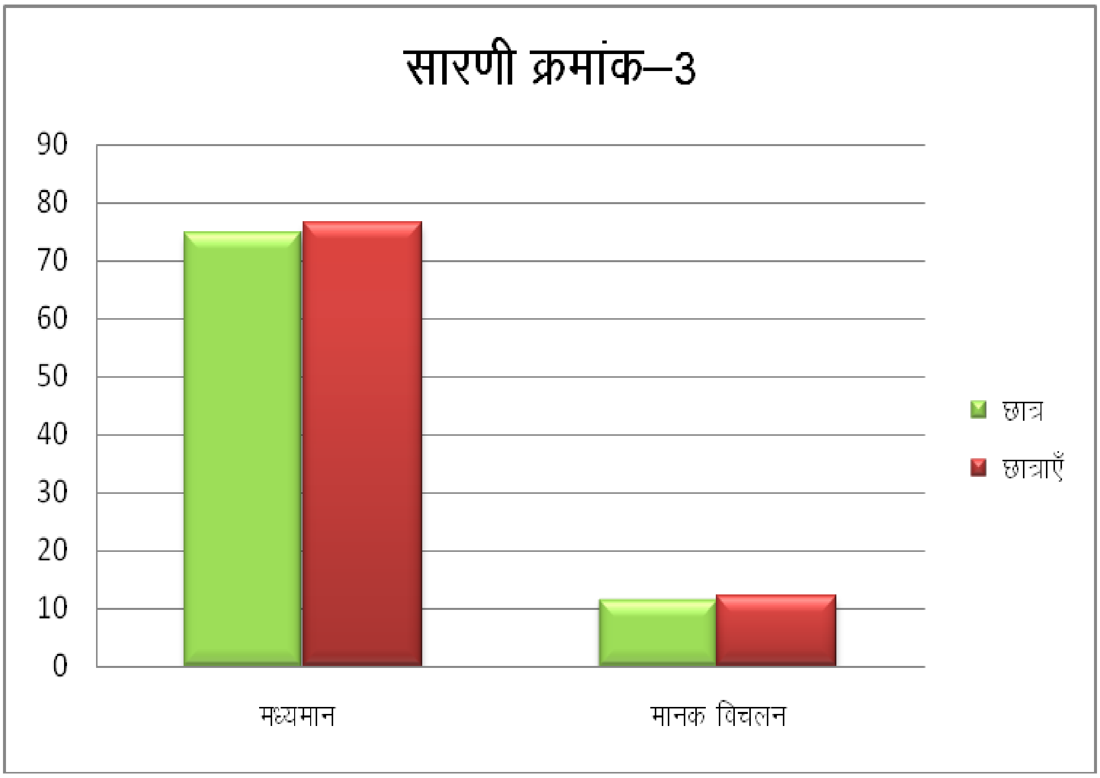

व्याख्या एवं विष्लेशण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पश्ट है कि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 74.64 एवं मानक विचलन 11.51 है तथा अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 76.53 एवं मानक विचलन 12.23 है। चूँकि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वातंत्रय (कण्णि) 48 पर सार्थकता के लिए ष्जष् का मान 0.05 विष्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विष्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त ष्जष् का मान 0.61 है जो कि दोनों स्तरों पर विष्वास मानों से कम है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर असार्थक है। चूँकि ष्जष् का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर षून्य परिकल्ना अस्वीकृत हाती है। अतः दोनों स्तरों पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर षहर के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

भ्व1ब : ग्वालियर षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक–4

ग्वालियर षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं ष्जष् का मान

समूह	छात्रों की सख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (व)	ज मान	निश्कर्श
षासकीय उ.मा. विद्यालय	25	72.00	4.00	5.09	सार्थक भ्01ब अस्वीकृत
अषासकीय उ.मा. विद्यालय	25	74.00	6.00		

स्वातंत्र्य ;कण्व्फ्द्ध त्र ;छ$_1$.1द्ध. ;छ$_2$.1द्ध त्र ;25.1द्ध. ;25.1द्ध त्र 24. 24 त्र 48

0.05 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.01, 0.01 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.68

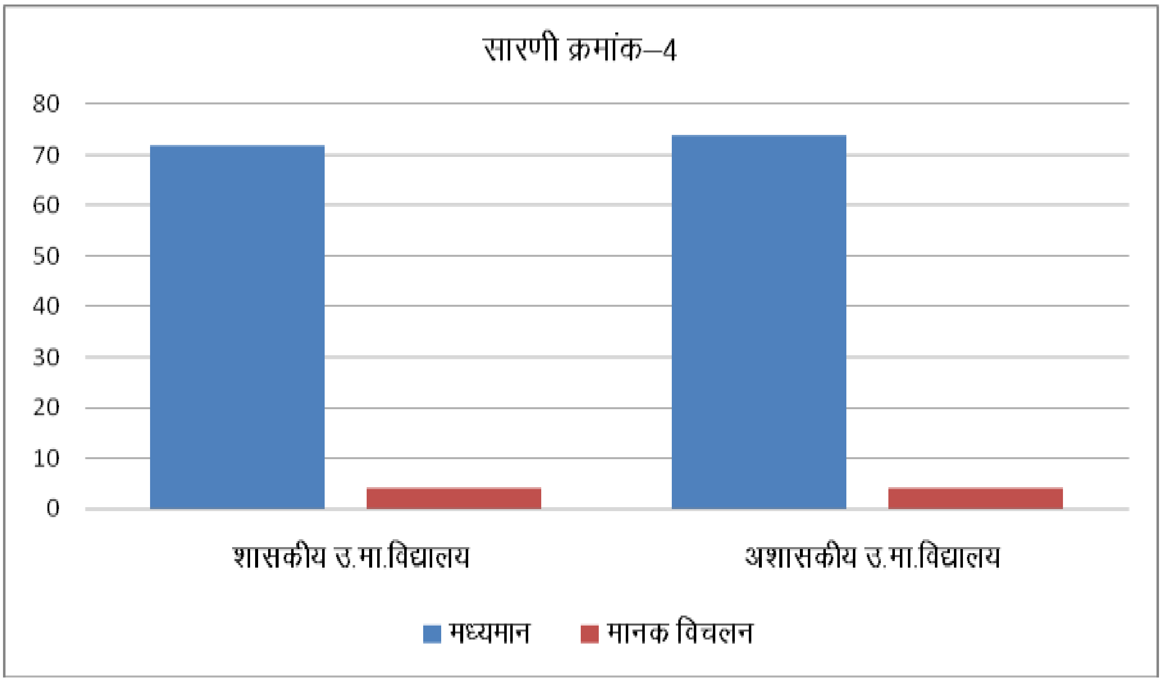

व्याख्या एवं विष्लेशण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पश्ट है कि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 72.00 एवं मानक विचलन 4.00 है तथा अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 74.00 एवं मानक विचलन 6.00 है। चूँकि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान षासकीय उच्चतर

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वातंत्रय (कण्णि) 48 पर सार्थकता के लिए मान 0.05 विष्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विष्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त ष्जष् का मान 5.09 है जो कि दोनों स्तरों पर विष्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। चूँकि ष्जष् का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर षून्य परिकल्ना अस्वीकृत हाती है। अतः दोनों स्तरों पर षून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

भ्व1क : ग्वालियर षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक–5

ग्वालियर षहर के शासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं ष्जष् का मान

समूह	छात्राओं की सख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन (ँ)	ज मान	निश्कर्श
षासकीय उ.मा. विद्यालय	25	62.63	15.03	5.06	सार्थक
अषासकीय उ.मा. विद्यालय	25	75.78	16.73		भ्01क अस्वीकृत

स्वातंत्रय ;कण्ण्द्ध त्र ;छ1.1द्ध ;छ2.1द्ध त्र ;25.1द्ध ;25.1द्ध त्र 24 24 त्र 48

0.05 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.01, 0.01 स्तर पर ज का अपेक्षित मान = 2.68

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

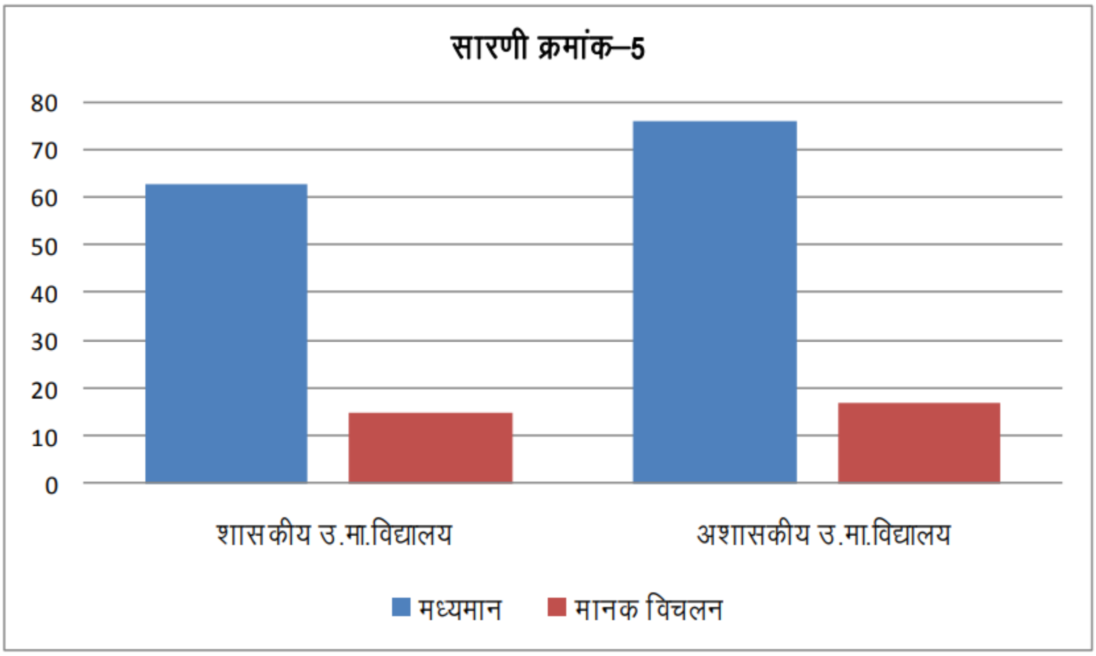

व्याख्या एवं विष्लेशण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पश्ट है कि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 62.63 एवं मानक विचलन 15.03 है तथा अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 75.78 एवं मानक विचलन 16.73 है। चूँकि अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वातंत्रय (कण्णि) 48 पर सार्थकता के लिए ष्जष का मान 0.05 विष्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विष्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त ष्जष का मान 5.06 है जो कि दोनों स्तरों पर विष्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। चूँकि ष्जष का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर षून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर षून्य परिकल्ना अस्वीकृत हाती है। अतः दोनों स्तरों पर षून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर षहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

निश्कर्श

- ग्वालियर शहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- ग्वालियर शहर के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्वालियर शहर के अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्वालियर शहर के षासकीय एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक अच्छी है।
- ग्वालियर शहर के **शासकीय** एवं अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की षैक्षिक उपलब्धि से अधिक अच्छी है।

उपर्युक्त निश्कर्श से स्पश्ट है कि ग्वालियर नगर के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा अषासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की षैक्षिक उपलब्धि उच्च कोटि की है। इसके प्रमुख कारण **शासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में षिक्षकों का अभाव, मूलभूत सुविधाओं की कमी, सरकारी नीतियाँ, षिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यभार, राजनीतिक हस्तक्षेप आदि हैं। उक्त कारणों से षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

षैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने हेतु सुझाव

ग्वालियर नगर के षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि उच्च कोटि की हो सके, इस हेतु निम्नलिखित सुझाव हैं –

- **शासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में षिक्षकों की कमी को दूर करके विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सकता है।

- **शासकीय** उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों का अतिरिक्त कार्यभार कम करके विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- षिक्षक अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें जिस प्रकार अपने परिवार के प्रति कर्तव्यों का पालन करते हैं तो विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में षिक्षकों द्वारा उपयुक्त षिक्षण विधि एवं तकनीकी का प्रयोग करके षैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों द्वारा षिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करके विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धिको बढ़ाया जा सकता है।
- षिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाकर उनकी षैक्षिक उपलब्धि को उच्चकोटि की बना सकते हैं।
- षिक्षकों द्वारा प्रतिदिन विद्यार्थियों को ग ृह कार्य देकर उनकी षैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सकता है।
- षिक्षकों का व्यवहार एवं रूचिकर ढंग से अध्यापन विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि कर सकता है।
- पालकों द्वारा अपने बच्चों को गृहकार्य प्रतिदिन ध्यान से देखा जाय तो षैक्षिक उपलब्धि में अवष्य वृद्धि होती है।
- पालक अपने बच्चों की दैनिक गतिविधियों पर यदि ध्यान दें तो षैक्षिक उपलब्धि में सुधार अवष्य होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता, एस.पी. (2005), भारतीय षिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्या, षारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद।
- आहूजा, राम (2007), सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेषन, दिल्ली।
- रायजादा, बी.एस. (1997), षिक्षा में अनुसंधान के आवष्यक तत्त्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- सुखिया, एस.पी. (1998), षैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- गुप्ता, एस.पी. (2005), भारतीय षिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्या, षारदा बुक भवन, इलाहाबाद।
- खान, प्रो. एस.एच. एवं श्रीमती षुक्ला भट्टाचार्य (1987), अध्यापकीय दर्षिका : परिवेषीय अध्ययन, राश्ट्रीय षैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिशद, नई दिल्ली।

- स्मिथ, एल.डी. (2000), विद्यालय वातावरण और षिक्षक प्रतिबद्धता, मथुरा प्रकाषन, मथुरा।
- सुखिया, एस.पी. (2017), षैक्षिक प्रषासन पर्यावरण षिक्षा एवं स्वच्छता, अग्रवाल पब्लिकेषन आगरा।
- शर्मा, आर.एस. (2002),विद्यालय संगठन तथा षिक्षा प्रषासन संगठनात्मक विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- सक्सेना, ओबेराय (2010), षिक्षा तकनीकी के तत्त्व एवं प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- भटनागर, आरती एवं अग्रवाल विद्या (2009),षैक्षिक प्रषासन संगठनात्मक विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।